Dear Gurubandhu and Guru Bhaganis

Further to our mail sent on January 16, 2016 wherein we had informed you about the second seminar being held in Jaipur from May 14 through till the 18th.

This letter is being sent to confirm those dates and a request for all of you to be present at this second of three seminars to be held, the first one being in Belgaum. The location of the third seminar will be communicated during this seminar. This seminar is of great importance and the realization of this will be understood, by the grace of Baba and Dada, after the third seminar.

With the blessings of the Vibhutis, Bauji has started improving and is much better. He is confident that he will be able to commence his regular routine work.. in another two weeks or so.

Please submit your names for attending and inform us of the number of people coming by April 15, 2016. Those who need hotel accommodation and others who need to sleep on beds. People staying within the center precinct will primarily be given a mattress and bedding. Other details have been given in the earlier letter.

We look forward to welcoming all of you on May 13th, 2016 in Jaipur.

With Baba and Dada's blessings

As conveyed by Bauji

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible

सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 144

श्री साई ाक : 34-35
फरवरी–मार्च : 2016

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधुभगिनियों से

कार्य के प्रति सेवकों की भूमिका

मानवीय जीवन में प्रसंग के अनुसार उतार चढ़ाव होते हैं उस समय सेवक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। एक बार परमपूज्य विभूतियों ने कहा था कि भक्त जितना झुकता है उससे ज्यादा सेवक को झुकना चाहिए, इसलिए सेवक को खुद की पसंद नापसंद बाजु में रखकर समयानुसार छोटापन स्वीकार करके रहना चाहिए। सेवक को कार्य करते समय यह दक्षता लेनी चाहिए कि जो भक्त कार्य की और आया है वह कभी भी कार्य से दूर ना जाए।"

वंदनीय दादा जी कहा करते थे कि "मानवीय जीवन में प्रसंग के कारण – (घटनाओं के कारण) जो उतार चढ़ाव आते हैं उस समय सेवक की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। ऐसे भक्त के जीवन को आधार देकर उसे कार्य प्रवृत करना और अपने खुद के आचरण द्वारा उस भक्त की कार्य के प्रति निष्ठा और श्रद्धा वृद्धिगंत करना यह प्रत्येक सेवक का कर्त्तव्य है।"

कार्यकेंद्र का कार्य करते समय, आरती, ॐ कार साधना करते करते कार्य केंद्र पर आने वाले भक्तों को प्रेम और अपना पन देकर तथा आधार (सहारा) देकर उनमें उनके बिना जाने

कार्य की चाहत निर्माण करना यह सेवक का आद्य कर्त्तव्य है इससे अनजाने में सेवक के और भक्त के इतरेजन ऋणानुबंध की पूर्तता होती रहती है।

वंदनीय दादाजी के कार्य में उनका दृष्टिकोण सदैव समाज के प्रति अग्रक्रम यानी प्राथमिकता पर था। वंदनीय दादाजी ने परमपूज्य विभूतियों का यह कहना उल्लेख किया है कि ''भक्त जितना झुकता है उससे ज्यादा सेवकों ने झुकना चाहिए'' यह एक ही बात सर्वार्थ रूप से सेवक की भूमिका स्पष्ट कर देती है।

अपने कार्य में हम जो दैनंदिन प्रार्थना करते हैं उसमें हमारे परिवार के उद्धार के लिए 'यह उच्चार करते हैं हमारे परिवार का इसमें अर्थ यह है कि इस परिवार में कार्यकेंद्र पर आने वाले सब गुरुबंधु, गुरुभगिनियों इनका तथा जगत के सब अन्य व्यक्तियों का समावेश है और इसलिए इन सबको समयानुसार मार्ग दर्शन करना, उन्हें प्रेम और आधार देकर कार्य से यानी गुरुचरणों से जोड़कर रखना यह कार्य केंद्र के प्रत्येक सेवक का कर्त्तव्य है।

अनेक बार हम कार्य का अनुशासन, नियम इत्यादि बनाकर भक्तों का मनोभंग करते हैं जो कि उचित नहीं हैं। वंदनीय दादाजी के कार्य में अधिक महत्त्व प्रेम को है, नियम अनुशासन बाजु में रखकर जब हम किसी व्यक्ति की सहायता करते हैं तब उस समय हम अनजाने में गुरुकृपा से उस व्यक्ति का जीवन बनाते हैं।

कार्य केंद्र का प्रत्येक सेवक तथा केंद्र प्रमुख परमार्थ मार्ग का नेता श्रीगुरु ने खुद निर्माण किया है। इसका अर्थ है कि किसी भी केंद्र को कार्य पद्धति से चलाने के लिए जिन नेतृत्व गुणों की आवश्यकता होती है वो गुण प्रत्येक सेवक के अन्दर श्रीगुरु ने खुद निर्माण करके दिए हैं। अन्य व अपनों को अपने नज़दीक रखकर आधार देना, उनके गुणों की जो उपासना करके उनके गुणों का कार्यार्थ उपयोग कर लेना, उनकी समस्याओं का हल करने में उनकी सहायता करना यह वं. श्री गुरु जी ने निर्माण किए प्रत्येक सेवक नेताओं का कर्त्तव्य है।

नियुक्त सेवक की यह अपेक्षा होती है कि कामकाज में आए प्रत्येक व्यक्ति ने उसका कार्य पूर्ण होते ही तुरन्त परमार्थ की राह पर चलना शुरू करना चाहिए और इस संबंध में जब सेवक की अपेक्षा पूर्ण नहीं होती तो वह सेवक अस्वस्थ होता है ऐसे अस्वस्थ सेवक को श्री गुरु ने यह मार्ग दर्शन किया है कि काम काज में आए प्रत्येक व्यक्ति को गुरुकृपा के वलय अंश प्राप्त होता ही है परन्तु गुरुकृपा का वलय भक्त की व्यक्तिगत अवस्था के अनुसार कार्य करता रहता है। इस गुरुकृपा से उस व्यक्ति के दोष उसके बिना जाने दूर हो जाते है और उसके बाद जब उस व्यक्ति को अपने जीवन की सार्थकता होनी चाहिए ''यह निश्चित प्रेरणा होती है उसी समय यह गुरुवलय उस भक्त के जीवन में पूर्णतः कार्य करने के लिए प्रवृत्त होता है''। परंतु यह क्षण उस भक्त के जीवन को कब आयेगा यह बता नहीं सकते। कभी कभी यह क्षण जल्दी आता है या कभी कभी अनेक वर्ष व्यतीत होने के बाद भी वह क्षण कार्यान्वित नहीं होता है। परन्तु फिर भी क्षण आने तक यह कृपावलय सबूरी से उस व्यक्ति के जीवन में रहता है। किसी व्यक्ति को गुरुकृपा प्राप्त होना यह उस व्यक्ति के माध्यम पर तथा उसकी अवस्था पर निर्भर होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी प्राकृतिक अवस्था अनुसार ही गुरुकृपा धारण करती है। इसी लिए अनेक व्यक्ति विभूतियों की मुलाकात सुनने के बाद भी केवल ''कामकाज'' यही ध्येय मानकर केवल कामकाज के लिए ही कार्यकेंद्र पर आते हैं। आरती साधना में सहभागी नहीं होते है। जिसका अर्थ यह है कि उनकी व्यक्तिगत अवस्था में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

कामकाज मायने वंदनीय दादाजी की अंतिम साधना की यानी शक्तिपीठ स्थापना की नींव है। कामकाज द्वारा यदि वंदनीय दादाजी ने प्रचंड़ लोक संग्रह किया है तो भी उनमें से 700–800 लोग ही साधना सम्मेलन में उपस्थित रहते थे।

कामकाज करते समय स्वार्थ यह मनुष्य धर्म है यह स्वीकार करके ही कामकाज किया तो वह कामकाज वास्तव रूप में निष्काम कर्म होता है मानवीय जीवन अलग अलग प्रकार के लोगों के विविध अंगो से सजा हुआ है। और ऐसे इस मानवीय जीवन की सेवा यही गुरुचरणों की सेवा है और यह कामकाज सुलभता से साध्य होता है।

जीवन में समस्याऐं आती जाती है परन्तु ऐसे समय मन का समतोल कैसे बनाऐ रखना यह हम हमारे दैनंदिन जीवन में यानी पारिवारिक जीवन से समझ सकते हैं तथा सीख सकते हैं। आज के मनुष्य को ब्रह्मचारी या सन्यासी का मार्गदर्शन पर्याप्त नहीं है। क्योंकि मार्गदर्शक को हर बात का स्वानुभव होना आवश्यक है। जिसने खुद प्रपंच करके परमार्थ साध्य किया होगा वह गुरु वास्तव में मार्गदर्शन कर सकता है।

।। शुभं भवतु ।।

सेवक

साईकल्प आध्यात्मिक संस्था